बाल साहित्य की ज़रूरत

हेमवती चौहान

बच्चों के पास अच्छा बाल साहित्य उपलब्ध हो और फिर उनके साथ मिलकर इस साहित्य को पढ़ा जाए, सुना-सुनाया जाए या और भी अन्तःक्रियाएँ की जाएँ तो यह सीखने-सिखाने में अनगिनत सम्भावनाओं की जगह बनाता चलता है। यह लेख कुछ ठोस उदाहरणों का विस्तृत वर्णन करते हुए इन विभिन्न सम्भावनाओं को देखने और समझने में मदद करता है। लेख कुछ उन मानदण्डों को भी इंगित करता है जो यह समझने में मदद करते हैं कि अच्छा बाल साहित्य हम किसे कह सकते हैं। सं.

एक अच्छा पाठक बनने के लिए आवश्यक है– पढ़े हुए को समझ पाना और तब उसका अर्थ समझते हुए उसे अपने जीवन से जोड़ पाना। यह सम्भव कर पाने में बाल साहित्य काफ़ी मददगार हो सकता है और इसलिए हमारी कक्षाओं में बाल साहित्य की ज़रूरत को रेखांकित भी किया जाता है। साहित्य सम्भावनाओं से भरा होता है, किसी भी पाठक द्वारा इसमें अपने अनुभवों को जोड़ा जा सकता है, नए अर्थ बनाए जा सकते हैं। साहित्य दुनिया की समझ को विस्तार देने में मदद करता है। इसके अलावा साहित्य पाठकों को आनन्द देता है और यही एक वजह है कि यह बच्चों को स्थाई पाठक बनाने में भी अहम भूमिका अदा करता है। अच्छे साहित्य के माध्यम से किताबों से जुड़ने का अनुभव बच्चों को लगातार मिलना चाहिए। स्कूलों में निर्धारित टाइम टेबल में सारा ध्यान पाठ्यपुस्तकों को पढ़ना-लिखना सिखाने की तकनीकियों पर केन्द्रित रहता है। ज़रूरत है स्कूल के प्रयासों में गहनता लाने और बच्चों को पढ़ना सिखाने की अक्षर पद्धति से आज़ाद होकर एक नए सिरे से सोचने की। पढ़ने के मायने को विकसित करने की भी आवश्यकता है, साहित्य वह सम्भावनाएँ देता है।

बाल साहित्य है क्या? इसके मायने सिर्फ़ बच्चों के पढ़ने के लिए सामग्री नहीं है... इसका कहीं गहरा अर्थ है। कोई भी किताब जो बच्चों को अच्छी लगती है, वह किशोर और वयस्क पाठकों को भी पढ़कर अच्छी लग सकती है। एक अच्छी सामग्री की ख़ासियत ही यही है कि वह सभी के मन को भा पाए। हाँ, अगर बच्चों के स्तर की किताब होगी तो ख़ुद से अर्थ बनाने और समझने में उन्हें शायद थोड़ी मदद मिलेगी। इसलिए कहा भी जाता है कि किताबें ऐसी हों जो बच्चों को उनसे जोड़ें, जिनमें उनके मन की बातें हों, जिन्हें पढ़कर वह ख़ुद के अनुभव उनसे जोड़ पाएँ और उनमें स्वयं को खोज पाएँ,

कहानियों का आनन्द उठा पाएँ। एक अच्छे बाल साहित्य के महत्त्व को समझने में यह उदाहरण मददगार होगा।

कक्षा तीन में किताब पढ़ने के दौरान मैंने बच्चों से कुछ प्रश्न पूछे, जैसे– आपको किताबें पढ़कर कैसा लगता है? एक बच्ची ने जवाब दिया, "अच्छा लगता है।" मैंने पूछा, "क्यों?" बच्ची ने कहा, "क्योंकि इनमें हमारे मन की बात होती हैं, पढ़कर हँसी आती है, मज़ा भी आता है।" एक दूसरे बच्चे ने कहा, "लगता है जैसे हम किसी से बात कर रहे हैं।" कुछ बच्चों ने जवाब दिए जैसे ऐसी चीज़ें दिखती हैं जो देखी तो नहीं, पर हैं, जैसे– शेर, हिरण... और ऐसी भी जो हैं ही नहीं, जैसे– डायनासौर और भी बहुत सारी चीज़ें। एक बच्चे ने कहा, "मैं भी ऐसी कहानी लिखना चाहता हूँ।" ये बच्चे नियमित पाठक भी रहे हैं। स्कूल बन्दी के टाइम पर भी।

बच्चों की किताबों की बनावट विविधता भरी होनी चाहिए। कुछ सामान्य से बड़ी किताबें, कुछ छोटी, कुछ आकार में चौड़ी किताबें, रंग-बिरंगी चित्रों से सुसज्जित, कार्टून, पशु-पक्षियों से सम्बन्धित किताबें बच्चों को बहुत लुभाती हैं।

बच्चों को समझने के लिए बातचीत को एक अहम साधन माना गया है। पाठ्यपुस्तकों से इतर किताबें बच्चों के साथ खुलकर बातचीत करने के ढेर सारे अवसर उपलब्ध कराती हैं। जब बच्चों में इस तरह की किताबों को पढ़ने की आदत व ललक लगेगी तब उनमें लेखन क्षमता का भी विकास होगा। बच्चे में पढ़ने की आदत विकसित करने के लिए यह भी अच्छा होता है कि हम स्वयं भी बच्चों के साथ पढ़ें। जब हम उनके साथ मिलकर पढ़ते हैं, बच्चे यह सब देखते हैं, अवलोकन करते हैं और आगे पढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं। यह भी कि बच्चों को प्रतिदिन कुछ पुस्तकें पढ़ने के लिए देना और उनपर बातचीत करना, उनको किताबों को चुनने, उलटने पलटने की आज़ादी देना भी बच्चों में किताबें पढ़ने की उत्सुकता जगाता है। ऐसा मेरा अनुभव रहा है। जब बच्चे किताबों से जुड़ने लगें तब किताबों पर कुछ गतिविधियाँ करवाई जा सकती हैं। जैसे– कभी बच्चों को ख़ुद कहानी पढ़कर सुनाना, बीच-बीच में उनसे कहानी को लेकर अनुमान लगाने को कहना, उनके अनुभवों को जोड़ने के लिए कहना, प्रश्न पूछना और बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए उत्साहित करना, स्वतंत्र पढ़ने के लिए छोड़ना, कभी समूह में पढ़ना तो कभी दो-दो की जोड़ी में, आदि। ऐसी और भी बहुत-सी गतिविधियाँ हो सकती हैं।

पाठ्यक्रम में कहानियाँ और कविताएँ

अच्छी सामग्री पाठ्यक्रम को सरल व सहज बनाने में सहयोग देती है। स्कूली पाठ्यपुस्तकें कभी भी आद्योपान्त नहीं पढ़ी जातीं। बच्चों को पूरी किताब पढ़ने का डर बना रहता है लेकिन जब हम पाठ्यपुस्तक से इतर किताबें शामिल करते हैं तो बच्चे उनको देखने, पलटने और पढ़ने में दिलचस्पी दिखाते हैं। बहुत-सी किताबें ऐसी होती हैं जो पाठ्यक्रम को समझने सरल बनाने में और पाठ्य सामग्री को विस्तार देने, ठीक से पढ़ाने में हमारी मददगार साबित होती हैं। यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत करती हूँ जो शायद यह समझने में मददगार होंगे कि पाठ्यपुस्तक को ठीक से पढ़ाने में इतर किताबें किस प्रकार मदद करती हैं। 'अनोखा रिश्ता' पेड़ों की दुनिया की कहानी है। हमारी सभी कक्षाओं व सभी विषयों, चाहे हिन्दी, अँग्रेज़ी, सामाजिक विषय, में पेड़-पौधे व पत्तों को लेकर पाठ्य सामग्री उपलब्ध है, जब इसी तरह की कहानी बच्चों के समक्ष एक बाल साहित्य के

रूप में रंग-बिरंगे, ढेरों आकर्षक चित्रों व सरल, स्पष्ट, छोटे-छोटे वाक्यों में लिखी किताब में कहानी के रूप में उपलब्ध होती है तो अनायास ही इसमें लिखी बातों को बच्चे मज़े-मज़े में पढ़ते हुए आत्मसात कर रहे होते हैं। ऐसा ही एक उदाहरण 'भालू ने खेली फुटबॉल' है। यह पाठ्यपुस्तक में एक कहानी के रूप में है और अलग ही ढंग से प्रस्तुत है। रंगीन, मोटे व चमकदार पर छोटे-छोटे वाक्य इस पाठ्य सामग्री को अधिक सरल बनाते व विस्तार देते हैं। एक छोटी-सी किताब के रूप में यह जब बच्चों के हाथ में होती है तो उन्हें लगता है कि हम पूरी पुस्तक पढ़ रहे हैं और होता क्या है, असल में एक सम्बोध को अच्छी तरह समझ पा रहे होते हैं। है न मज़ेदार रूप से सीखना! ऐसा ही एक उदाहरण है 'अनोखे घर के बाशिन्दे'— इसमें चिड़ियों का संसार है। जब बच्चों के हाथ में यह किताब आती है, तो वे इसे अनायास ग्रहण करते चले जाते हैं। ऐसे ही 'लालू और पीलू' की कहानी, 'बत्तख के अण्डे', 'चूहे की कहानी', 'बाघ की कहानी', रसोईघर, खान पान, फ़सलें, त्योहार, बादल, तारे, सूरज, मौसम इन सभी से सम्बन्धित पाठ्य सामग्री हमारी पाठ्यपुस्तकों में है और बाल साहित्य में ये छोटी-छोटी किताबों के रूप में रोचक तरीक़े से उपलब्ध है।

बच्चों के साथ किताबों पर बातचीत

अलग-अलग कहानियों और कविताओं को पढ़ना, सीखने में कैसे मदद करता है, क्या-क्या सीखने में मदद करता है, बच्चों में इसके ज़रिए समझ कैसे विकसित होती है, उन्हें क्या लाभ मिलता है, कैसे यह भाषा शिक्षा में सहयोगी हो सकती हैं, इन सब प्रश्नों को गहराई से समझने के लिए मैंने बच्चों के साथ इसपर काम शुरू किया। यह कैसे होगा, इस बारे में कुछ ख़ास नहीं सोचा था लेकिन काम शुरू कर दिया। बच्चों को बाल साहित्य की किताबें देती, कुछ बच्चे तो बहुत व्यस्त होकर पढ़ते लेकिन कुछ बच्चे ऐसे भी थे जो जी चुराते थे फिर भी उन्हें समझा-बुझाकर ज़बरदस्ती दे देती थी। लाइब्रेरी का समय भी निर्धारित कर दिया था लेकिन यह समय सारिणी के हिसाब से व्यवस्थित नहीं चल पा रहा था। मुझे जब भी लगता कि अभी ख़ाली समय है तभी मैं बच्चों को किताबें पकड़ा देती और जब भी समय मिलता मैं उन किताबों को स्वयं भी पढ़ती थी। पूरी नहीं भी पढ़ पाती तो सरसरी निगाह ज़रूर डालती थी। कभी बच्चों से बातचीत करती तो किताब के बारे में जान लेती थी। इससे एक फ़ायदा यह हुआ कि बच्चे रुचि ले रहे थे और उन्हें यह भी आभास रहता कि मैडम भी पूरे उत्साह के साथ हमारे साथ हैं। इस प्रक्रिया से एक दूसरे के साथ काम करने की जो बॉन्डिंग बनती है यह काम के आनन्द को दुगना कर देती है और जो हम चाहते हैं वह सहज ही सामने आता रहता है।

तीसरी कक्षा के बच्चों के साथ मैंने किताब पर काम किया। वैसे मेरा हर सम्भव प्रयास रहता है कि प्रत्येक किताब पर बात करूँ लेकिन सभी किताबों, कहानियों पर विस्तृत बात नहीं हो पाती है। मैंने कुछ किताबों पर बात की, जैसे— 'अनोखा रिश्ता' कहानी पर मैंने कुछ प्रश्नों का निर्माण किया। सबसे पहले बच्चों को मुखपृष्ठ दिखाकर, चित्र में कौन-कौन दिख रहे

हैं और कहानी में क्या होगा, इसपर अनुमान लगाने के लिए कहा। बच्चों ने तुरन्त जवाब दिया कि चित्र में बच्चा और एक पेड़ दिखाई दे रहे हैं। इस बच्चे और पेड़ में दोस्ती होगी। किसी ने कहा, "यह बच्चा पेड़ को प्यार करता होगा।" किसी ने कहा, "यह छुपने का खेल खेल रहा होगा।" मेरे आश्चर्य का ठिकाना न था कि इतना सटीक अनुमान लगाया गया था। कहानी में आगे क्या है, यह भी बच्चे अनुमान लगाकर बता रहे थे। मैंने बच्चों को कहानी पढ़ने के लिए दी, फिर पढ़कर सुनाई। बीच-बीच में चित्रों पर और कहानी के अनुसार प्रश्न पूछती रही कि कौन-से फल का पेड़ है? बच्चे और उसके दादाजी के बीच में कैसा रिश्ता है? बच्चों ने कहा, "बच्चे और दादाजी के बीच में बहुत प्यार भरा रिश्ता है। दादाजी बच्चे को बहुत प्यार करते हैं और बच्चा भी दादाजी को बहुत प्यार करता है। वह पेड़ को अपना दादा मानता है।" बच्चे कहानी को समझते हुए सही जवाब दे रहे थे। मैंने पूछा कि मौसमी फल कौन-से होते हैं? आपके आसपास कौन-से फल के पेड़ हैं? बच्चों ने बिलकुल तपाक से जवाब दिया, "आम, पपीता, अमरूद, बेर का पेड़।" पेड़ों के फ़ायदे पूछे? बच्चों ने तुरन्त बहुत सारे फ़ायदे गिना दिए कि लकड़ी मिलती है, फल मिलते हैं, आदि। जिया ने कहा, "पत्तों से त्योहारों पर बन्दनवार बनाते हैं, पूजा में रखते हैं।" आदर्श ने कहा, "फ़र्नीचर मिलता है।" मैंने पूछा, "क्या पेड़ों से दवाइयाँ भी मिलती हैं?" बच्चों ने कहा, "हाँ।" मैंने पूछा, "ऐसे कौन-से पेड़ होते हैं?" बच्चों का जवाब था, "नीम, नींबू, हल्दी, तुलसी, करेला।" मैंने पूछा, "अनार कैसे दवाई देता है?" बच्चों ने जवाब दिया, "इसको खाने से ख़ून बढ़ता है।" मैंने पूछा, "आप पेड़ों की देखभाल करते हैं?" बच्चों का जवाब था, "हाँ, हम पानी देते हैं।" मैंने पूछा, "यदि कोई आपके यहाँ पेड़ काटने आएगा तो आप क्या करेंगे?" बच्चों ने कहा, "मना कर देंगे पेड़ काटने के लिए, उन्हें इसके फ़ायदे बताएँगे फिर भी अगर वह नहीं माने तो हम पेड़ों से चिपक जाएँगे।" ऐसा जवाब वह भी तुरन्त, प्रतिक्रिया देख-सुन कर मैं गदगद थी।

ऐसा ही एक और अनुभव साझा करना चाहूँगी। यह कहानी थी– 'कुत्ते के अंडे'। इसका शीर्षक व मुखपृष्ठ मैंने बच्चों को दिखाया। वे विस्मित से दिखाई दिए और ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे कि कुत्ते के भी अण्डे होते हैं। मैंने बच्चों से अनुमान लगाने के लिए कहा। थोड़ी देर वह शान्त रहे, फिर बोले, "मैम कुत्ता अण्डा थोड़े ही देता है वह तो बच्चे देता है।" उन्होंने अपने आसपास के

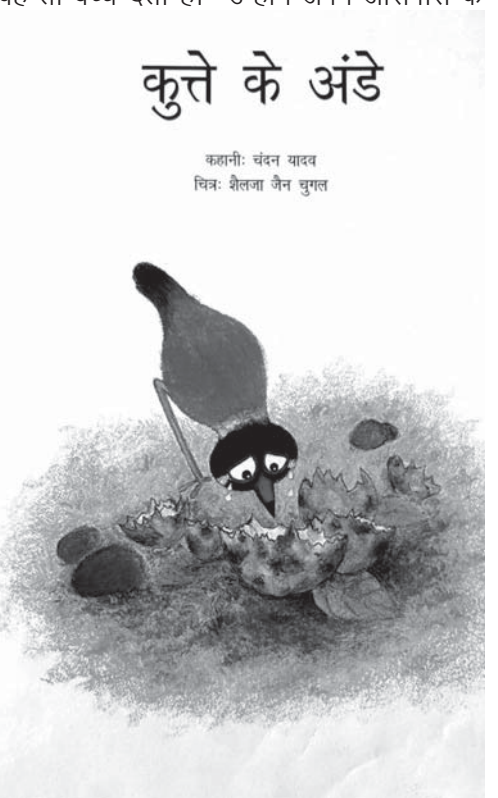

उदाहरण भी दिए। मैंने पूछा, "अण्डे कौन-कौन देते हैं?" वंश कुमार बोला, "मुर्ग़ी अण्डे देती है।" मानवी बोली, "बत्तख भी अण्डे देती है।" फिर और बच्चे भी बोलने लगे कि मछली, छिपकली, साँप यह सब अण्डे देते हैं। मैंने कहा, "हाँ, बात तो सही है कुत्ते अण्डे तो नहीं देते लेकिन किताब का शीर्षक तो कह रहा है, देखो चित्र भी यही बता रहा है।" लेकिन तभी मीनाक्षी बोली, "मैम देखो, कुत्ता कुछ सोच रहा है, क्या सोच रहा है यह नहीं पता लेकिन मुर्ग़ी और चिड़िया तो अपने अण्डों को अपने नीचे रखकर गरमाई देते हैं।" मैं

समझ रही थी कि बच्चे क्या कहना चाह रहे हैं। मैंने कहा, "चलो किताब पढ़कर ही पता करते हैं।" किताब पढ़कर पूरी बात साफ़ हो गई। बच्चे ख़ुश थे और जान गए थे कि अण्डे टिटहरी के हैं और वह अण्डे से निकलते ही जिसे पहली बार देखते हैं उसे अपनी माँ समझते हैं। कहानी पूरी होने पर बच्चे आपस में बात कर रहे थे कि अगर वह हमें पहली बार देखेंगे तो हमें भी माँ समझेंगे और ख़ूब ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे। कहानी पढ़कर बहुत ही सुखद अहसास हो रहा था और बच्चों के मन की बहुत-सी बातें जानकर अच्छा लग रहा था। ऐसी ही *बरखा* सीरीज़ की बहुत-सी कहानियाँ हैं जिनसे बच्चे स्वयं को जोड़ते हैं अपने आसपास से उनकी तुलना करते हैं। अपनी समानता उन कहानियों में देखते हैं और बहुत आनन्द लेते हैं और यहीं से उनकी भाषा की समझ बनने लगती है। जब भोजन माताएँ ख़ाली दिखाई देती हैं तो मैं उनको भी बाल साहित्य की किताबें पढ़ने के लिए दे देती हूँ। अकसर सातवीं, आठवीं, और दसवीं के कुछ बच्चे भी किताबें ले जाते हैं।

इस पूरी क़वायद में सबसे आवश्यक एक शिक्षक का पूरी तरह सक्रिय व स्वयं उत्साही बने रहना है। बच्चे में पढ़ने की आदत विकसित करने के लिए स्वयं पढ़ना और बच्चों व शिक्षक के बीच आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करना, एक

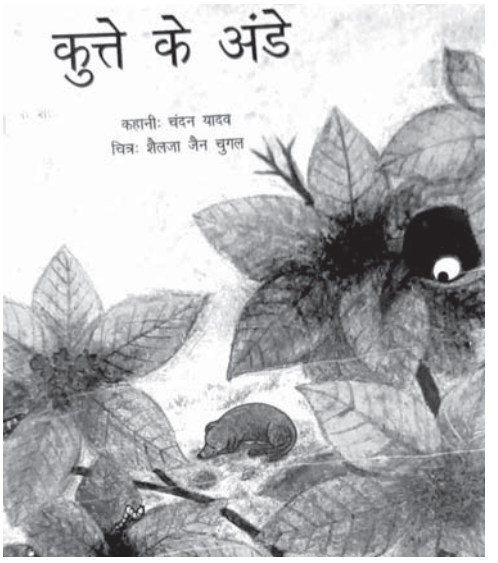

दूसरे को समझना और विश्वास करना, बच्चे को पढ़ने व अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता देना उसे स्थाई पाठक व जिज्ञासु बनाने में मदद करेगा। पाठ्यपुस्तकों से इतर साहित्य बच्चों को अपने विचार रखने, स्वतंत्र प्रतिक्रिया देने, सवाल उठाने और अपने अनुभवों को शामिल करने के कई अलग-अलग मौक़े उपलब्ध कराता है। इसकी उपेक्षा करना इन मौक़ों को कम करना है, और इस तरह यह बच्चों को भाषा, संस्कृति, इतिहास, भूगोल, त्योहार, रिश्तों से जोड़े रखने के संस्कार से भी वंचित रख सकता है।

सन्दर्भ

1. पाठ्यपुस्तक *रिमझिम*

2. 'बात', प्रो. कृष्ण कुमार (*बच्चे की भाषा और अध्यापक* पुस्तक से)

3. रीडिंग कार्नर पर एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित पोस्टर और इससे सम्बन्धित विभिन्न लेख

4. 'कहानियाँ कहाँ खो गईं' (प्रो. कृष्ण कुमार की पुस्तक *दीवार का इस्तेमाल* से)

5. बाल साहित्य की किताबें— अनोखा रिश्ता, भालू ने खेली फुटबॉल, बत्तख के अण्डे, कुत्ते के अण्डे, चूहे की कहानी, नाव की कहानी, *बरखा* सीरीज़ की किताबें

हेमवती चौहान राजकीय प्राथमिक विद्यालय पार मजरा, विकासखण्ड काशीपुर, उत्तराखंड में शिक्षिका हैं। आपको बाल साहित्य पढ़ना और बच्चों के किताबों पर काम करना अच्छा लगता है। आपकी बच्चों से बातचीत करने, उन्हें समझने में गहरी रुचि है।
सम्पर्क : hemachauhan8777@gmail.com